

आमि घरे थाकि।

अहं गृहे तिष्ठामि।

मया गृहे स्थीयते।

बालकटि विद्यालये शस्ये।

बालकः विद्यालये हसति।

बालकेन विद्यालये हस्यते।

घोडा दूटि यास्ये।

अश्वौ गच्छतः।

अश्वाभ्यां गम्यते।

विद्या विनयके दानकरे।

विद्या विनयम् यच्छति।

विद्यया विनयम् दीयते।

पाचक दूध रान्नाकरे।

पाचकः दुग्धम् पचति।

पाचकेन दुग्धम् पच्यते।

राजारा चरदेरद्वारा देथे।

नरपतयः (नृपाः) चरैः पश्यन्ति।

नरपतिभिः (नृपैः) चरैः दृश्यते।

बालकगुलि शतदिये बई पड़छे।

वालकाः करैः पुस्तकानि पठन्ति।

वालकैः करैः पुस्तकानि पठ्यन्ते।

सेविका मन्त्रीदेर सेवाकरछे।

सेविका अमात्यानाम् (अमात्यान्) सेवते।

सेविकया अमात्यानाम् सेव्यते।

सेविकया अमात्याः सेव्यन्ते।

मुनि शिष्यदेर जिज्ञासाकरछे।

मुनिः शिष्यान् पृच्छति।

मुनिना शिष्याः पृच्छ्यते।

আমাদের বুদ্ধি আমাদের বল। বুদ্ধিরদ্বারা আমরা কাজ করি। বুদ্ধিমান রোগা (কৃশ) মানুষ সবলের থেকেও বলবান। এইবিষয়ে একটা গল্প (কথা) আছে। এক সিংহ ছিল। সে বনের সব পশুদের খায়। প্রতিদিন সে একটি করে পশুকে খায়। একদিন একটি খরগোশ (শশক) সিংহটিকে বলল ‘আমি তোমারথেকেও বলবান সিংহকে দেখেছি’। সে ওই কূপে থাকে । সিংহ সেখানে গেল। খরগোশটি সিংহটিকে কূপে নিষ্ফেপ করল (নিষ্ফেপতি)।